
CBSE Class 12 हिंदी ऐच्छिक

पुनरावृत्ति नोट्स

पाठ-19

पाठ परिचय

लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है। उसने कवि को प्रजापति के समान सृष्टि सिद्ध किया है। लेखक ने प्रजापति का दर्जा देते हुए कवि को उसके कार्यों के प्रति सचेत किया है। साहित्य समाज का दर्पण मात्रा नहीं है। कवि का कार्य समाज के यथार्थ जीवन को मात्रा प्रतिबिंबित करना नहीं है। कवि अपनी रूचि के अनुसार अपनी रचनाओं में संसार की रचना करता है। प्रजापति द्वारा निर्मित सृष्टि से असंतुष्ट होकर कवि नए समाज का निर्माण करता है। यह कवि का जन्म सिद्ध अधिकार है।

स्मरणीय बिन्दु

- कवि की सृष्टि निराधर नहीं होती। वह अपने सारे रंग आकार और रेखाएँ चारों ओर बिखरे यथार्थ जीवन से ही ग्रहण करता है। अपनी साहित्य रचना के लिए सामग्री कवि अपने चारों ओर के परिवेश से ही ग्रहण करता है। उज्ज्वल चरित्रा को उज्ज्वल और अधिक प्रभावशाली दिखाने के लिए लेखक यथार्थ जीवन से दुश्चरित्रा भी चुनता है। रावण के होने से ही राम की महत्ता है। कवि सद्गुण सम्पन्न पात्रों साथ दुर्गुणयुक्त पात्रों का भी वर्णन करता है।
- बाल्मीकि ने दुर्लभ गुणों से युक्त राम के चरित्रा का वर्णन किया था। दुर्लभ गुणों को एक ही पात्रा में दिखाने के पीछे कवि का एक ही उद्देश्य होता है- समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करना, जिससे लोग प्रेरणा ले सकें।
- प्रजापति रूपी कवि यथार्थवादी होता है। वह समाज में लोगों के सुख-दुख, आशा-निराशा दोनों पक्षों को सुनता है, उसे महसूस करता है तथा उसे अपने साहित्य में अंकित भी करता है। उसकी रचनाओं में वर्तमान समाज का ठोस आधार होता है परन्तु उसका ध्यान भविष्य के नव-निर्माण पर लगा होता है। साहित्य थके हुए व्यक्ति के लिए विश्रान्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है।
- यदि ब्रह्मा द्वारा बनाए गए समाज में मानव सम्बन्ध कवि की रूचि एवं आदर्शों के अनुरूप होते तो उसे अपनी रचनाओं में एक नया संसार रचने की आवश्यकता ही नहीं होती। कवि के असंतोष की जड़ ये मानव संबंध ही है। साहित्य की रचना का मूल ये मानव संबंध ही है। कवि के मन-मस्तिष्क में मानव संबंधों की भावना इतनी प्रबल होती है कि वह अपनी रचनाओं में ईश्वर को भी मानवीय रूप में चित्रित करता है।
- ऐसे समय में जब अधिकांश लोगों का जीवन समाज की रूढ़ियों के बंधन में जकड़ा हुआ हो, वे इन बंधनों से दुखी हो तथा मुक्ति के प्रयास कर रहे हो तब कवि का प्रजापति रूप मुखरित हो उठता है। कवि मानव रूपी पक्षी की अशांत आवाज़ को स्वर देता है। वह स्वतंत्रता के गीत गाकर जनता में शासक वर्ग के प्रति आक्रोश भरता है। वह स्वतंत्रता के लिए प्रेरित कर उस पक्षी के पंखों में नई शक्ति भर देता है। इसे भय से मुक्त होने तथा स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है।
- यह जीवन संघर्ष का मैदान है। इसमें व्यक्ति को निरन्तर संघर्षशील रहना पड़ता है। जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने पाञ्चजन्य नामक शंख बजाकर अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित किया था, उसी प्रकार साहित्यकार लोगों को कर्मक्षेत्रा में संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। वह लोगों में उदासीनता नहीं, उत्साह का स्वर बुलंद करता है। वह इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं कि मनुष्य अत्याचार सहते हुए, कष्ट सहते हुए, भाग्य के भरोसे रहे। साहित्य तो ऐसी प्रेरणा देने वाला की निंदा

करता है, उन्हें हतोत्साहित करता है।

- आज भी मानवीय-संबंधों की दृष्टि से भारत पराधीन है। भारतीय जनमानस स्वतंत्र होने के लिए व्याकुल है इसके लिए वह सतत प्रयास कर रहा है। ध्विकार है उन साहित्यकारों को जो उन्हें रूढ़ियों से मुक्त नहीं करता। वे साहित्य में तो मानवमुक्ति के गीत गाते हैं किन्तु व्यवहार में भारतीय जनता को गुलामी का पाठ पढ़ाते हैं। ऐसे साहित्यकारों को ध्विकार है जो भारतभूमि से उत्पन्न होकर भी उसका अहित कर रहे हैं।
- भारतीय लोगों को गुलामी का पाठ पढ़ाने वाले ये साहित्यकार दूरदर्शी नहीं हैं। जिन साहित्यकारों को भारतभूमि से प्यार है, वे साहित्य के युग परिवर्तन की भूमिका से अवगत हैं, वे साहित्य के माध्यम से जनता का सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।